हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन –एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा से

चित्रकला में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिकाः

डॉ. सोनिका
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा।

शोध छात्राः

प्रियंका कुमारी
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय
डी.ई.आई. (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा।

संकाय प्रमुख

प्रो. जे.के. वर्मा
अध्यक्ष अग्रेजी विभाग
कला संकाय

विभागाध्यक्ष

प्रो. रागिनी रॉय
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,
कला संकाय

शोध संकल्पना

कला की उत्पत्ति अति प्राचीन काल से ही मानी गई है। कला का प्रारम्भिक स्वरूप हमें प्रागैतिहासिक काल की कलाओं में देखने को मिलता है। मनुष्य का विकास जैसे–जैसे होता गया और वह सभ्य बनता गया उसी प्रकार कला का विकास भी होता गया। समय के साथ–साथ कला धीरे–धीरे अपना विकसित रूप ग्रहण करने लगी, जो आगे चलकर स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं संगीत कला आदि, इन रूपों में सामने आई। इस प्रकार और विचार धाराओं का विकास हुआ।

राजस्थान में चित्रकला की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। राजस्थानी सभ्यता और संस्कृति को गौरवान्वित करने का श्रेय यहाँ की चित्रकला को भी रहा है। राजस्थान में चित्रकला के प्रति अभिरुचि और उसका मौलिक स्वरूप परम्परागत रूप से प्रचलित था।

राजस्थानी चित्रकला की निम्नांकित चार शैलियाँ हैं, जिनमें अनेक शैलियाँ, उपशैलियाँ पनपीं और विकसित हुईं तथा एक –दूसरे से प्रभावित होती रही हैं, यथा– 1. मेवाड़ शैली, 2. मारवाड़ शैली, 3. हाड़ौती शैली, 4. ढूंढाड़ शैली। इन चार शैलियों को भौगोलिक संरचना और राजपूत राजवंशों की सांस्कृतिक परम्परा ने जो विशिष्टता प्रदान की है, वह चित्रकला में सहज ही झलकती है।

चौहान वंशीय हाड़ाओं का प्रसार और प्रताप बून्दी, कोटा व झालावाड़ क्षेत्र में रहा, इसलिए यह 'हाड़ौती क्षेत्र' कहलाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र कलात्मक विरासत का गढ़ रहा है। हाड़ौती की चित्रकला का इतिहास राजस्थानी चित्रकला के अनुकूल ही हुआ है। 'बून्दी शैली' 'कोटा शैली' 'झालावाड़ शैली' एवं अन्य ठिकाणों की कला को हम 'हाड़ौती शैली' के साथ रख सकते हैं।

कोटा कला के मुख्य आश्रयदाता 'राज उम्मेद सिंह' (1771–1820) के काल में कोटा शैली की बड़ी उन्नति हुई। राजमहल की भित्तियों पर विभिन्न प्रकार के चित्र बने है, जिनमें पेड़–पोधों,

पशु–पक्षी, पुष्प आलेखन आदि भव्य दृश्य अंकित किये गये हैं। कोटा के उत्कृष्ट भित्ति–चित्र झाला की हवेली, राजमहल तथा देवता जी की हवेली में देखने को मिलते हैं।

बून्दी राज्य की राजधानी जिस कस्बे में स्थित थी उसको राजा रावदेव ने सन् 1342ई० में बसाया था। उनके बाबा का नाम 'बून्दा' था, उन्हीं के नाम पर इसका नाम बून्दी रखा गया। पहाड़ियों पर बसा बून्दी नगर समुद्री सतह से 1400 फुट ऊँचा है। इसी नगर में चित्रकार अपनी कल्पना को चित्रो ंके रूप में सजाते थे। जो चित्र यहाँ सृजित हुए उनकी एक स्पष्ट निजी शैली है, जिसे विद्वानों ने "बून्दी शैली" नाम दिया।

बून्दी शैली में पशु–पक्षियों के चित्रण की बहुलता है। यहाँ के शासक राव छत्रसाल ने प्रसिद्ध रंगमहल बनवाया, जो सुन्दर भित्ति चित्रों से सुजज्जित है। इसके साथ ही साथ बून्दी शैली में भव्य राजमहल, भवनों का निर्माण हुआ है। उन्हीं में से एक भवन को चित्रशाला के नाम से भी जाना जाता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी शोधकार्य का आरम्भ करने से पूर्व उससे सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करना अनिवार्य है। मेरे शोध कार्य का विषय "हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" है। अपने विषय से सम्बन्धित मैंने अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया। जिनसे मुझे शोध विषयक सामग्री एकत्र करने में सहायता मिली। लेखक जय सिंह नीरज की पुस्तक 'राजस्थानी चित्रकला' व 'M.s Randhawa की पुस्तक Indian Painting' से मैंने राजस्थानी कला इतिहास की जानकारी प्राप्त की। श्री सुखवीर सिंह गहलोत की पुस्तक 'कोटा राजवंश', श्री रामगोपाल विजयवर्गीय की पुस्तक 'पेंटिंग्स ऑफ कोटा', डब्लू.जी. आर्चर की पुस्तक 'इण्डियन पेंटिंग्स इन बून्दी एण्ड कोटा, मथुरा लाल शर्मा की पुस्तक 'कोटा राज्य का इतिहास,' Jiwan Sodhi की पुस्तक 'Bundi School of Painting' व Pramod Chandra की पुस्तक 'Bundi Painting' से मैंने बून्दी–कोटा शैली के इतिहास को भली–भाँति जाना है। डॉ. बद्री नारायण वर्मा की पुस्तक 'कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा', Rosa Maria Cimino की

पुस्तक 'Wall Painting of Rajasthan', R.A Agarwal की पुस्तक ‘Wall Painting from Central India,’ ब्रजमोहन परमार की पुस्तक ‘म्यूरल ऑफ हाड़ौती’ से मैने हाड़ौती के भित्ति चित्रों की परम्परा, सौन्दर्य व कलात्मक रूप को जाना। इन पुस्तकों और अन्य स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मैं हाड़ौती के भित्ति–चित्रों में आलेखन कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन करूँगी।

परिकल्पना

किसी भी शोधकार्य को करने से पहले शोध कार्य की सफलता हेतु परिकल्पना तैयार करना अतिआवश्यक है। परिकल्पना शोध कार्य की दिशा निर्देशित करती है। जिससे शोधार्थी अपने उद्‌देश्य की प्राप्ति कर सके।

राजस्थान में अनेक समृद्धिशाली नगर हैं और वहाँ एक साथ असंख्य चित्रकारों ने अपनी सतत् साधना के द्वारा अपनी तूलिकाओं से विभिन्न चित्रों का निर्माण किया। अतः राजस्थान के इन नगरों के नाम पर उनकी चित्र–शैलियाँ भी प्रचलित हुईं। कोटा–बून्दी व झालावाड़ भी उन्हीं में से एक हैं और चित्रकला की दृष्टि से अनुपम हैं।

हाड़ौती क्षेत्र के लघु चित्रों की भांति यहाँ भित्ति चित्रण की भी एक महत्वपूर्ण परम्परा रही है। इस क्षेत्र में कोटा, बून्दी व झालावाड़ महत्वपूर्ण कला केन्द्र रहे हैं। यहाँ पर विभिन्न भव्य महल, भवन व हवेलियाँ बनवाये गये हैं, जिनमें कलाकारों ने भित्तियों को अलंकृत रूप प्रदान किया है।

बून्दी–कोटा शैली में विभिन्न विषयों पर चित्रकारी चित्रकारों द्वारा भित्ति पर की गई है। इन विषयों के साथ ही साथ भित्ति चित्रों में आलेखन कार्य भी किया गया है जिससे भित्ति चित्रों में एक अलग ही सौन्दर्य रूप की वृद्धि हो रही है।

उद्‌देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय “हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन’’ के सम्बन्ध में शोध कार्य के उद्‌देश्य इस प्रकार हैं–

- हाड़ौती शैली में बून्दी, कोटा व झालावाड़ क्षेत्र के राजमहल व भवनों के भित्ति–चित्रों के आलेखनों को प्रकाश में लाना।
- हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन के रूप वैविध्य का उद्‌घाटन करना।
- भित्ति चित्रों में आलेखन की तकनीक व कला तत्वों पर आधारित विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- कोटा, बून्दी व झालावाड़ के भित्ति चित्रों में आलेखन कार्य का तुलनात्मक व संरक्षण परिदृश्य का अध्ययन।

चर

- स्थानीय भ्रमण एवं अध्यक्षों से साक्षात्कार
- विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालय
- इण्टरनेट
- कला प्रशंसक एवं समीक्षक
- कला शिक्षक
- कला विद्यार्थी

कार्य प्रणाली

➢ **अनुसंधान अभिकल्प :–** मैं अपना शोध विषय "हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन–एक विश्लेषणात्मक" अध्ययन प्रस्तुत कर रही हूँ, जिसके लिए मैंनें वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि को अपनाया है।

➢ **प्रदत्त संकलन :–** तथ्यों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित होगा।

- **प्राथमिक स्त्रोत :–** सम्बन्धित क्षेत्र के महल, भवन व हवेलियों में वास्तविक भित्ति के आलेखन का अवलोकन, भ्रमण आदि।

- **द्वितीयक स्त्रोत :–** साक्षात्कार, लेख, पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, वेबसाइट्स व संग्रहालयों के संग्रहकर्त्ता तथा अपनी शोध निर्देशिका से विचार विमर्श आदि।

➢ **प्रतिदर्श :–** मेरे द्वारा कोटा, बून्दी व झालावाड़ के महलों, भवनों से भित्ति चित्रों के लगभग 125 आलेखन चित्रण का चयन किया जायेगा। यह भित्ति चित्र आलेखन कला परम्परा का प्रतिनिधित्व करेंगे।

➢ **प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया–** मेरे प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया के अन्तर्गत अवलोकन, साक्षात्कार व महल, भवनों में चित्रित भित्ति चित्रों के आलेखन का विश्लेषण आदि सम्मिलित होगें।

➢ **सीमाएँ :–** प्रत्येक शोध कार्य एक समय सीमा पर आधारित होता है। मैं शोध कार्य की सीमा अवधि एकत्रित में प्रदत्तों के आधार पर कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूँगी। मेरा शोध कार्य हाड़ौती के भित्ति चित्रों में केवल आलेखन पर ही आधारित होगा। यह अध्ययन केवल हाड़ौती शैली के बून्दी, कोटा व झालावाड़ क्षेत्र पर आधारित होगी।

हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध संरचना

भूमिका :– **भारतीय चित्रण परम्परा में आलेखन–एक परिचय।**

प्रथम अध्याय :– राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र का परिचय

1.1 हाड़ौती की भौगोलिक सीमाएँ– बूंदी ,कोटा व झालावाड़।

1.2 ऐतिहासिक परिवेश।

1.3 हाड़ौती क्षेत्र की चित्रकला के स्त्रोत– भित्तिचित्र, लघुचित्र व पोथीचित्र।

द्वितीय अध्यायः– कोटा भित्ति चित्रों के आलेखन

2.1 रूपाकार

2.2 विषय

2.3 कला तत्वों पर आधारित विश्लेषण

तृतीय अध्यायः– बून्दी भित्ति चित्रों के आलेखन

3.1 रूपाकार

3.2 विषय

3.3 कला तत्वों पर आधारित विश्लेषण

चतुर्थ अध्यायः– झालावाड़ भित्ति चित्रों के आलेखन

4.1 रूपाकार

4.2 विषय

4.3 कला तत्वों पर आधारित विश्लेषण

पंचम अध्याय :– हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन का तकनीकी आधार।

षष्ठम् अध्याय :– कोटा, बून्दी व झालावाड़ के भित्ति चित्रों में आलेखन कार्य का तुलनात्मक अध्ययन एवं संरक्षण।

उपसंहार –

परिशिष्ट

- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
- BIBLIOGRAPHY
- वेबसाइट्स
- चित्र सूची
- समाचार पत्र

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका के अन्तर्गत मैं भारतीय चित्रण परम्परा में आलेखन का क्रमिक परिचय प्रस्तुत करूँगी।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मैं राजस्थान के हाडौती क्षेत्र का भौगोलिक व ऐतिहासिक परिचय तथा हाड़ौती राज्य की चित्रकला के स्त्रोंतों का अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत कोटा भित्ति चित्रों के आलेखन के रूपाकार, विषय व कला तत्वों पर आधारित विश्लेषण का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत बून्दी भित्ति चित्रों के आलेखन के रूपाकार, विषय व कला तत्वों पर आधारित विश्लेषण का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत झालावाड़ भित्ति चित्रों के आलेखन के रूपाकार, विषय व कला तत्वों पर आधारित विश्लेषण का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाएगा।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत हाड़ौती के भित्ति चित्रों में आलेखन का तकनीकी आधार प्रस्तुत किया जायेगा।

षष्ठम अध्याय के अन्तर्गत कोटा, बून्दी व झालावाड़ के भित्ति चित्रों में आलेखन कार्य का तुलनात्मक अध्ययन व संरक्षण परिदृश्य का अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।

उपसंहार :– भारतीय भित्ति चित्रकला में आलेखन परम्परा के अन्तर्गत हाड़ौती के आलेखानों के सौन्दर्य को प्रतिष्ठित करते हुए समकालीन व्यावसायिक राजस्थानी कलारूपों पर उनके प्रभाव की चर्चा की जायेगी।

दिनांक

प्रियंका कुमारी

शोध छात्रा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, आर.ए. – भारतीय चित्रकला का विकास, लायक बुक डिपो, मेरठ।
- अग्रवाल, ओ.पी., पाठक रश्मि – 2002, भित्ति चित्रों की जाँच और संरक्षण।
- अग्रवाल, गिर्राज किशोर – कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़।
- अग्रवाल, वासुदेवशरण – 1966, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी।
- अग्रवाल, श्यामबिहारी – 1999, भारतीय चित्रकला का इतिहास, रूपशिल्प प्रकाशन, इलाहाबाद।
- उपाध्याय, भगवत शरण – 1980, भारतीय कला की भूमिका, पीपूल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली।
- उपाध्याय, वासुदेवशरण – 1980, भारतीय कला की भूमिका, प्रकाशन, नई दिल्ली।
- गोस्वामी, प्रेमचन्द्र – 1972, राजस्थान की लघुचित्र शैलियाँ, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर।
- द्विवेदी, प्रेम शंकर – 2007, भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी।
- वर्मा, बद्री नारायण – 1989, कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- वर्मा, अविनाश बहादुर – 1998, कला एवं तकनीकी, बुक डिपों प्रकाशन बड़ा बाजार बरेली।
- शर्मा, मथुरा लाल – कोटा राज्य का इतिहास

BIBLIOGRAPHY

- Agarwal, R.A – 1987, Wall Painting from Central Indian
- Agrawal, V.S. - 1965, Indian Art Prithivi Prakashan, Varanasi.
- Anand, Mulak Raj - 1973, Album of Indian Painting, National Book Trust of India.
- Archer, W.G. – 1959, Indian Painting in Bundi and kota
- Brawn, Percy - 1947, Indian Painting, Y.M.C.A. Publication house, Calcutta.
- Chaitnya, Krishna – 1982, A History of Indian Painting, Rajasthan Tradition , New Delhi.
- Chandra, Pramod – Bundi Painting, Lalit Kala Acadamy.
- Cimino, Rosa Maria - 2001, Wall paintings of Rajasthan, Aryan Baooks International, New Delhi.
- Gupta, Shyamala – 1979, The Beautiful in Indian Arts, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.
- Jain, J.L.- 1935, Rajasthan Directories
- Randhawa, M.S. & Galbraith, Kenneth john- 1980, Indian painting, The scene, Themes and legend, vaklis feffer & simons limited Bombay india.

INTERNET WEBSITES

- http://www.google.co.in
- http://hiwikipedia.org
- http://hi.wkipedia.org/wiki/ukf;dk
- webvarta.com
- https://hindi.mapsofindia.com>bundi
- http://hindi nativeplanet.com Chitrashla
- http://m.bhaskar.com.>Bundi News

- https://www.gkexams.com
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/
- https://m.patrika.com/story/rajasthan
- https://m.bhaskar.com/rajasthan

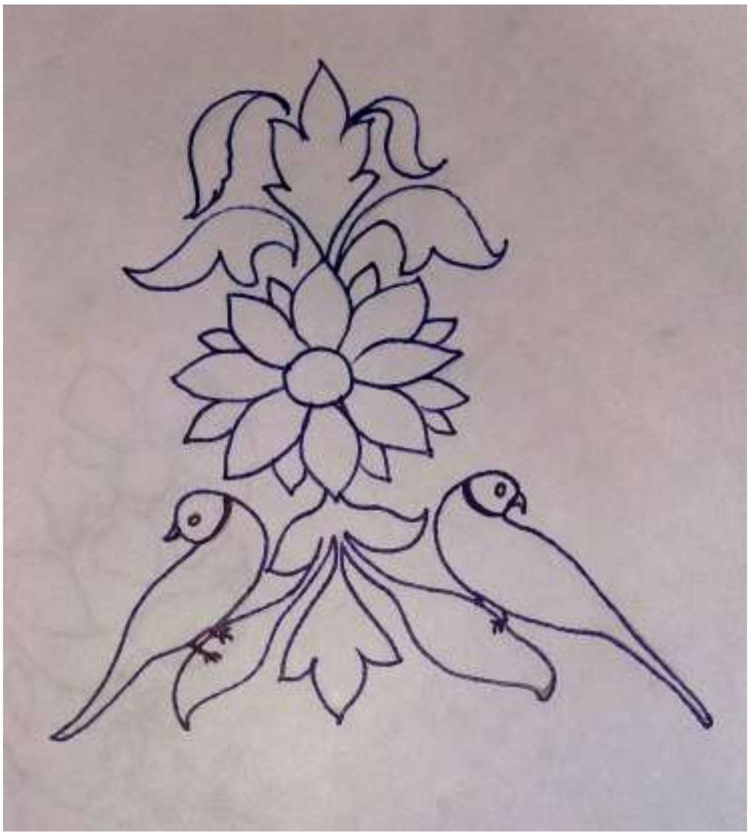

रेखाकंन

चित्र सं. 1, बूंदी चित्रशाला से प्राप्त आलेखन, 18वीं शताब्दी

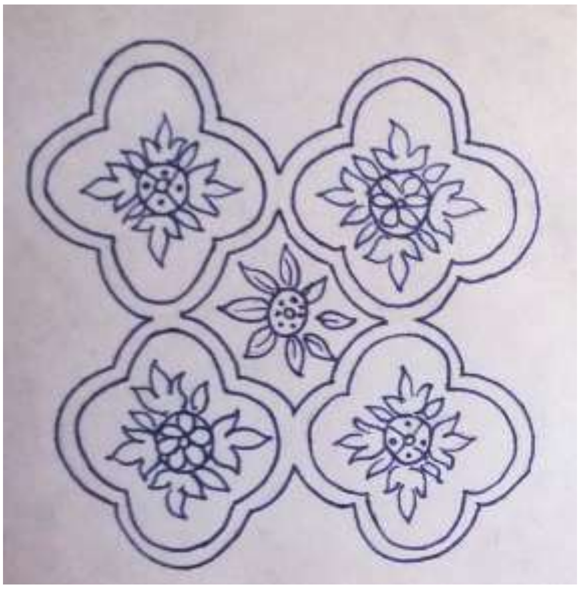

रेखाकंन

चित्र सं. 2, कोटा से प्राप्त आलेखन, 17वीं शताब्दी

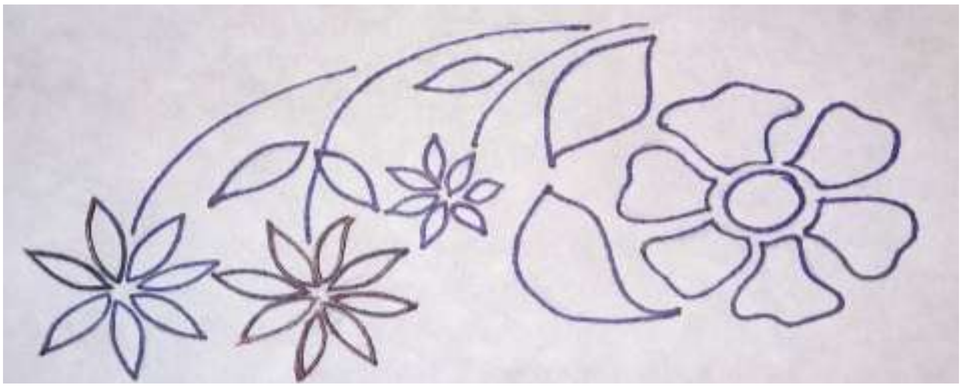

रेखाकंन

चित्र सं. 3, झालावाड़ से प्राप्त आलेखन, 17वीं शताब्दी